



इक्कीसवीं सदी का गंगावतरण

एक युग परिवर्तन: विज्ञान और अध्यात्म का महा-समन्वय

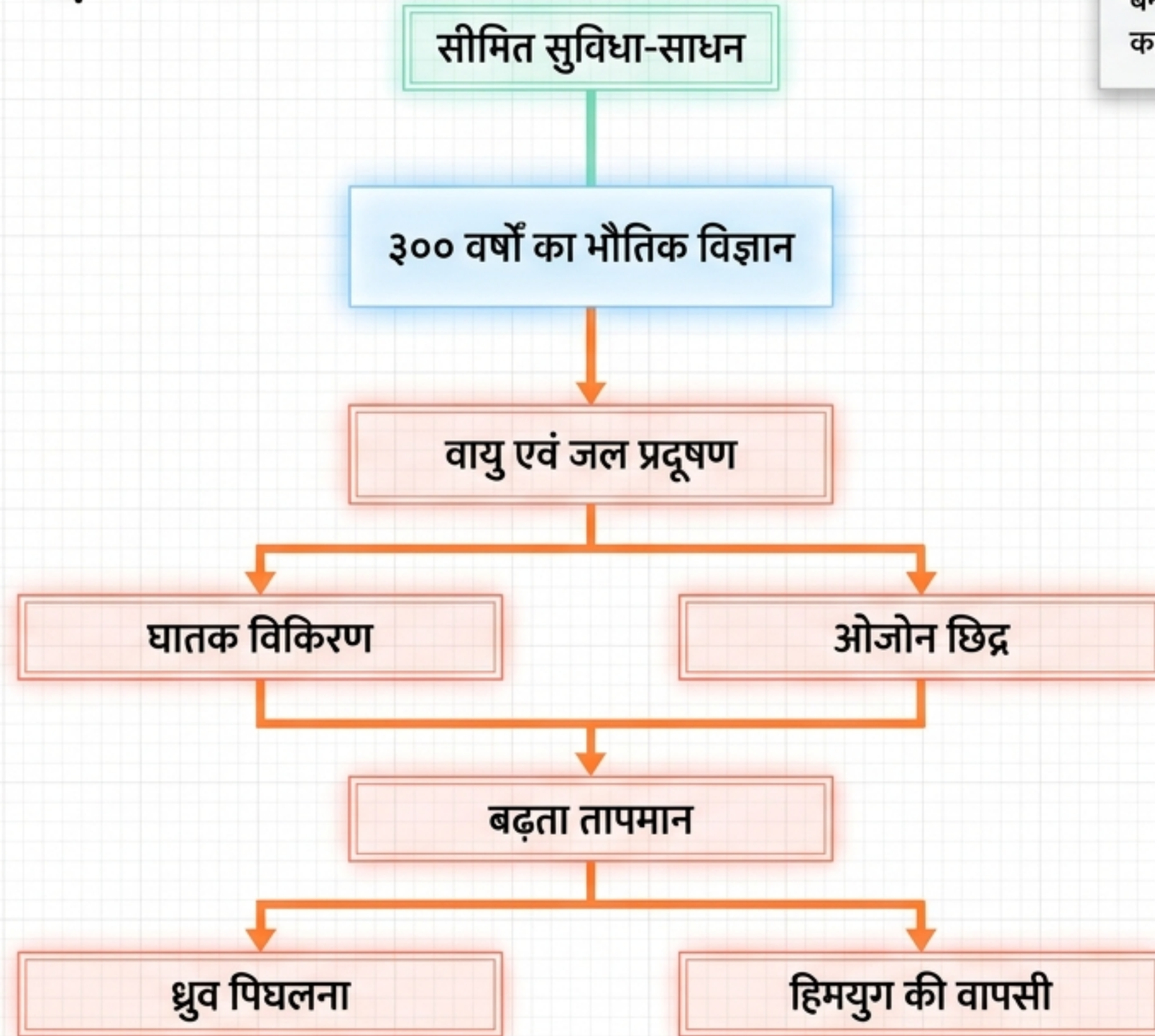
“ वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”

— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप लोकेगा — सब बच्चों से कहियेगा कहियेगा कि मेरे ज्ञानी मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”

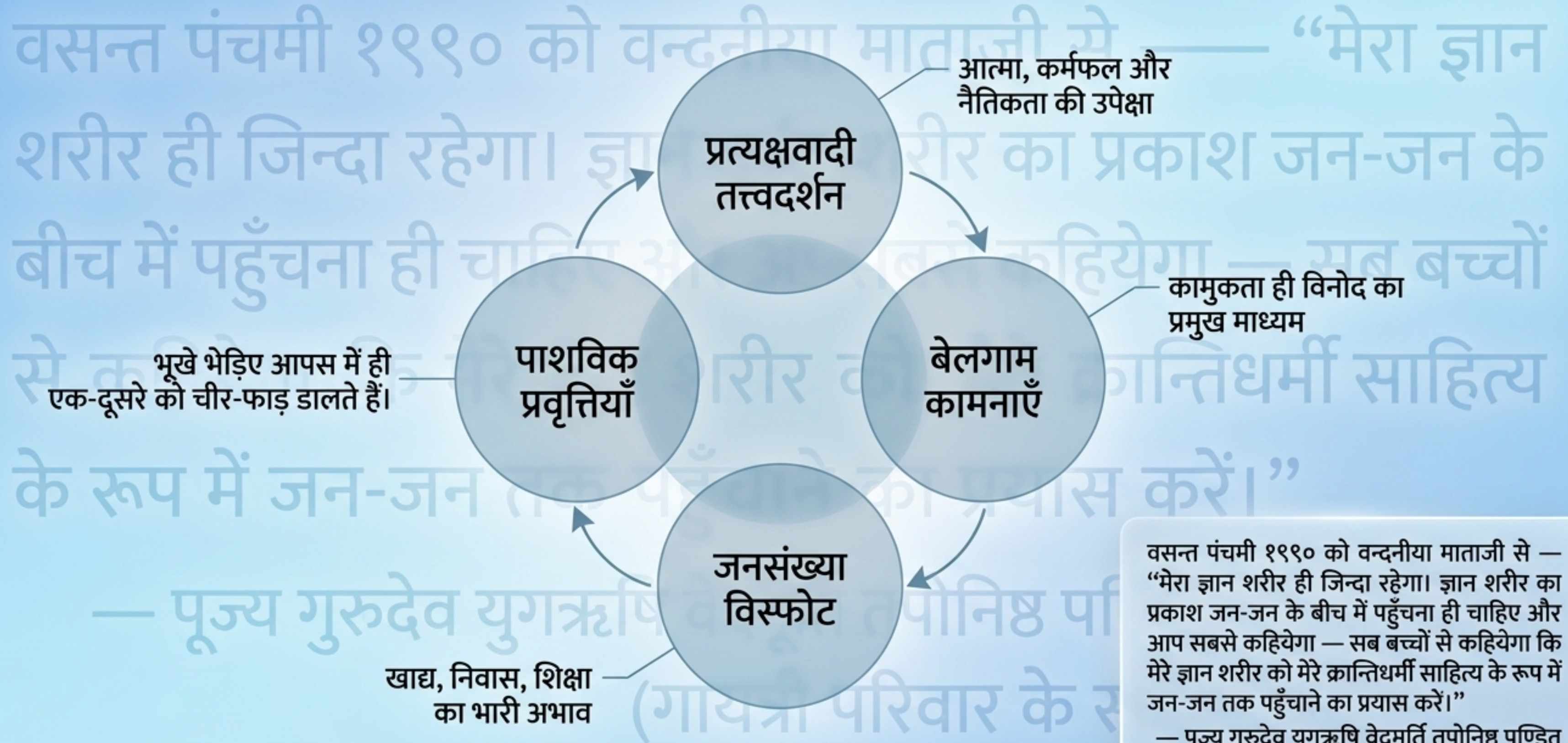
— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

प्रगति का विरोधाभास: विनाश की ओर बढ़ते कदम



यदि उपलब्धियों का सदुपयोग न बन पड़े, तो वह एक बड़े दुर्भाग्य का कारण बन जाता है।

पतन का चक्र: दर्शन की मृत्यु से सामाजिक विनाश तक



वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से —
“मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”

— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

आज की सबसे बड़ी विडम्बना: जो हो सकता था, बनाम जो है



रोग का मूल कारण: समस्या बाहर नहीं, भीतर है



वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”
— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

एकमात्र अचूक औषधि: विचार क्रान्ति



नवयुग के अवतरण (सतयुग की वापसी) का यही एकमात्र उपाय है।
समझदारों के सिर पर चढ़ी हुई नासमझी का उन्माद उतारना ही होगा।

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से – “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का और आप सबसे कहिगा – सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान कहियेगा – सब बच्चों से कहियेगा कि और रूप मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”

जन-जन तक पहुँचाने काने का प्रयास करें।

— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

अभियान का पैमाना: ६०० करोड़ का 'ब्रेन वाशिंग'

सम्पूर्ण मानव जाति
का परिष्कार

एकता और समता
की छत्रछाया

६०० करोड़

उदारता और विवेकशीलता
की स्थापना

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”
— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

बिल्ली के गले में घण्टी कौन बाँधेगा? (नेतृत्व का आह्वान)

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से —
“मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का
प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए
और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा
कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के
रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”

— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदगूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य
(गायत्री परिवार के संस्थापक)

1
दशरथ

विश्वामित्र को
अपने पुत्र सौंपे

2
गुरु
गोविन्द
सिंह

पाँचों पुत्रों का
बलिदान

3
हरिश्चन्द्र

स्वयं को गुरु के
लिए समर्पित किया

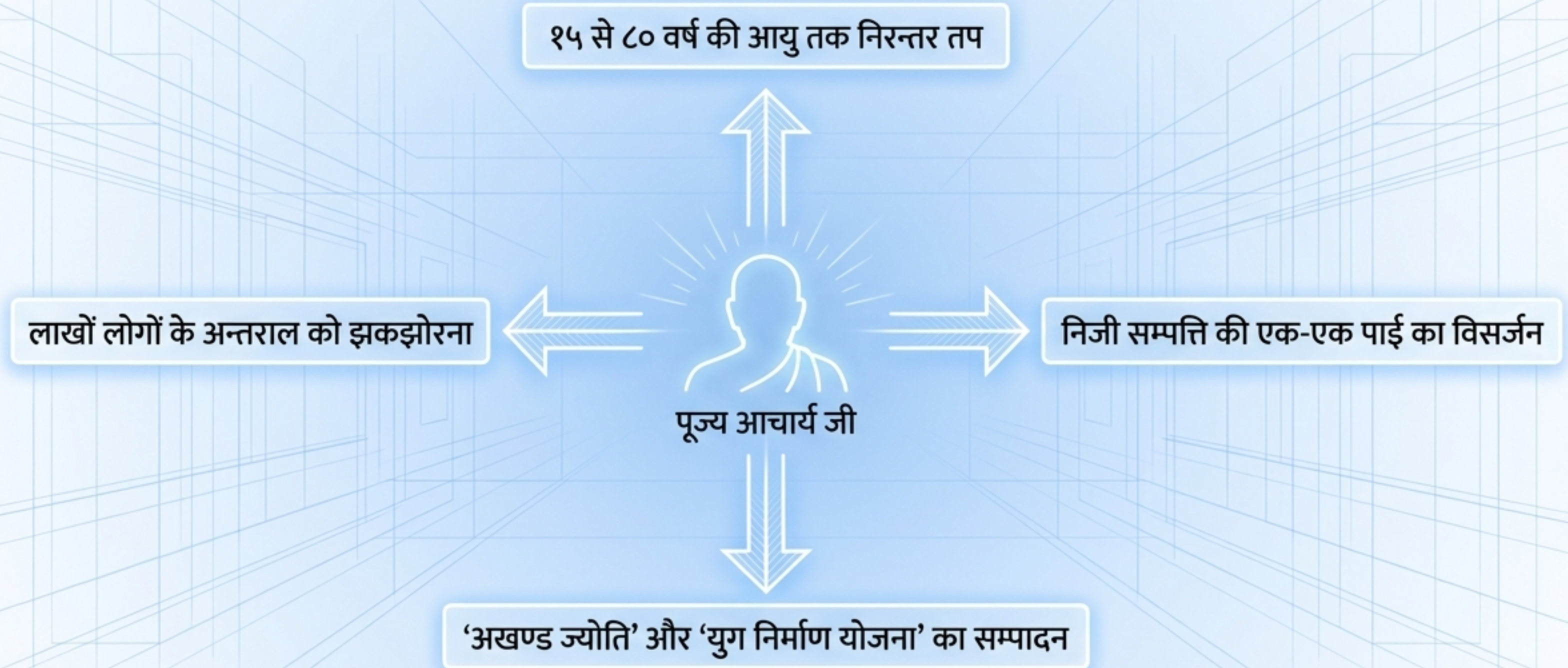
4

आज के आत्मदानी
और प्राणवान् युवा

अपना उदाहरण प्रस्तुत
करके ही दूसरों को प्रेरित
किया जा सकता है।

खोज घर से आरम्भ करनी चाहिए।

प्रयोग का शुभारम्भ: युगऋषि का आत्मदान



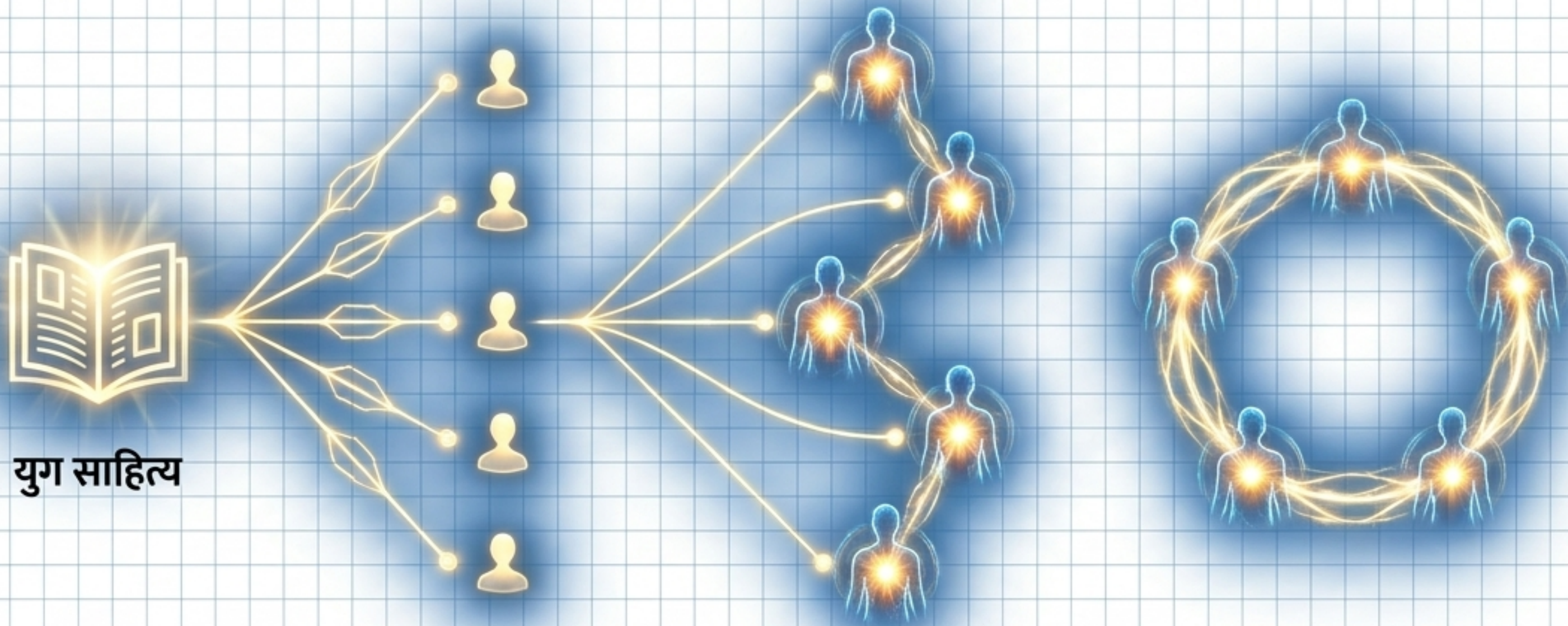
वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”

— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से – “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा – सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”

— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

साहित्य का जीवन्त तंत्र: एक से पाँच का सूत्र



युग साहित्य

हर अंक को न्यूनतम ५
व्यक्ति पढ़ते हैं

अन्तराल को
झकझोरना

युग समस्याओं से जूझने के लिए
आत्मीयता और योगदान

घातांकीय विस्तार मॉडल: १ से ६०० करोड़ की यात्रा

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।” — पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ गोलाकार श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

६०० करोड़ मनुष्यों का विश्वव्यापी आलिंगन

१ करोड़ प्राणवान सृजन शिल्पी

२५ लाख पाठक

इस बढ़ते हुए परिकर में अनहोनी जैसी कोई बात नहीं।

५ लाख स्थायी सदस्य

२५

५

१

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।” — पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ-कार श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

२१वीं सदी का मास्टर ब्लूप्रिंट: विनाश से नवसृजन तक

अवांछनीयताओं का अंधकार

लोहे को काटता लोहा: साहित्य और आत्मदान

इक्कीसवीं सदी का गंगावतरण



वैज्ञानिक संकटों का एकमात्र समाधान
आध्यात्मिक विज्ञान और जन-सहभागिता में निहित है।

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से —
“मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश
जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे
कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को
मेरे कान्तिधर्म साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का
प्रयास करें।” — पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ
पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)